

5689

Shri Raghunatha Temple MSS. Library,
JAMMU

No. ६६४-६

Title उवाला मुखीस्तत्रम्

Author _____

Extent ४ Age _____

Subject तन्त्रम् . सम्पूर्णम्

नं० ई ७८४-घ

(तन्त्रम्) ज्वाला मुखी स्तोत्रम् (स्तोत्रम्)

पत्राणि ४ (चत्वारि) (सम्पूर्णम्)

नं० ७४-घ

! श्रीगणेशाय नमः॥ ॥ उज्ज्वलदेवी जयदेवी स्रका
रे नयदायनी॥ उज्ज्वलदेविरुते पापं ज्वाला मुखी न
मो स्तुते॥ १॥ नवकोटी श्यामुंजा कामाक्ष्या काम
रूपिणि॥ चंडमुंडहयानित्वा ज्वाला मुखी नमो
स्तुते॥ २॥ कराली कलिनी काली कालरात्री त्रा
सलीनी॥ नद्रकाली कराली च ज्वाला॥ ३॥ म
रुमाया च वुंदवी महादेवनि कंदनी॥ खड्गश
क्तिधरा देवी ज्वाला॥ ४॥ ननु गणेश उज्ज्वलदेवी

महावास्तुरवेदनी॥ प्रचंडरूपगिदेवा ज्वा
ला॥ १॥ शुंननी शुंनरुंती चरक बीजशो
षणी॥ कात्ती कापांणी रुस्तेषु ज्वाला॥ २॥ हुं
महाविद्या महास्त्री यहा मांगी लघुरूप
णि॥ मधुकैट नरुंती न्यासी ज्वा॥ ३॥ कं
मांगी धम्मचारिणि रुद्ररूपि नयं करी॥
कमराक्षी नीलस्मका त्याच ज्वा॥ ४॥ ठी
शाकं नरुंती कंगी नृपरा मोचतारिणि

॥ ५॥
॥ ६॥

त्राहुरात्रीश्वरान्ताचज्वाला॥१०॥नील
ननेदनीदेवीअष्टसिद्धिमाशुबला॥ज
रापंधानीपातिचज्वाला॥११॥-आकाश
तुंचदेवीसापातालेश्वरेश्वर॥मृत्पुलो
कंचतुंचदेवीसापातालेज्वाला॥१२॥श्वे
तारत्तातथास्थानाअनेकरूपधरिणी
॥देव्यानामदिनताचज्वाला॥१३॥अने
युगेचतुंचदेवीसापातनकास्वती॥दे

वाङ्मरेदोपतंदिदी चाला०॥१३॥ मेषराशिच
तुं देवी आदिना धानवग्न हा॥ अष्टम्ब
ऊं न योगेषु ज्वाला०॥१४॥ गायत्री सान्त्व
सावित्री सारदा हंसवाहिनी॥ सुमरते वे
दधरा देवी ज्वाला०॥१५॥ आरूढारूपी
या देवी जालंधरनी वासीनी॥ चतुर्षष्टि
समारूढी ज्वाला०॥१६॥ गणगंधर्वसिधा
नां स्तुतं जन्म सदादिनी॥ ततो देवी प्रसा

रामा

देन ज्वाला ॥ १७ ॥ विद्यार्थिलेन ते विद्यां धना
र्थिलेन ते धनं ॥ पुत्रार्थिलेन ते सुत्रं मोक्षं
र्थिलेन ते गतिः ॥ १८ ॥ दालिद्रि मुक्तिमाप्नो
तिः कुष्ठदेवा धनासिनी ज्वाला सुप्रसादे
न विमुक्तनात्र संषयः ॥ १९ ॥ इति तत्र प्रत्न दत्ते
देवी अथ पुत्रप्रदायिनी ॥ राजपुत्री कंटकं देवी
ह्यसुपुत्रेन जतते सदा ॥ २० ॥ निकाममोष्यदा
देवी देहि मेरा वरां करि गतमष्टदेहि धरायां

3

च बुद्धिविधा सुधानी च ॥ २१ ॥ रा उपं द्वारे च सं
 ग्रामेः नदि नारे च संकटे ॥ ज्येष्ठु मति नग
 ते नि त्पा स व त्र वि ज्ञ या न वे त् ॥ २२ ॥ नी त्प
 मे व प्र भा वे न जे सु म ति च मा न वा ॥ वां छा
 ती थ फे ल सि धि प्रा प्ते ये ना व शं स यः ॥ २३ ॥
 ज न्मा दि च क र तं पा पं स व क्षा र दि ना नि च ॥
 ज्वा ला स्त व प्र सा दे नु च्य ते स व क्ता ल्वा षं
 ॥ २४ ॥ का शि म्मा स पु ह्ये च सु ग मे कं प्र थो

राम ॥
 ॥ २५ ॥

CC-0 Dharmartha Trust J&K. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative